आ मु ख -

हिंदी नाट्य साहित्य में ज्ञानदेव अग्निहोत्री जी का स्थान महत्त्वपूर्ण है। युध्द नाटक लिखकर उन्होंने अपना एक विशेष्ठा स्थान बना लिया है। वे खुद एक अच्छे अभिनेता हैं, परंतु उन दिनों हिंदी नाटकोंपर पारसी रंगमंच का प्रभाव था। पारसी अभिनय शैली की अतिनाटकीयता से असंतुष्ट होकर वे नाट्य लेखन की तरफ मुड गये। उन्होंने सन १९५८ में आंतर विश्वविद्यालय रेडिओ नाटक प्रतियोगिता के लिए ` चिराग जल उठा ` नाटक लिखा - जिसे प्रथम पुरस्कार मिला। इससे प्रेरणा लेकर आपने हिंदी नाट्य क्षेत्र में एक से बढकर एक नाट्य कृतियों का निर्माण किया, जिससे आपका नाम हिंदी नाट्य क्षेत्र में चमक उठा। हिंदी नाट्य क्षेत्र में आपका यह योगदान अमूल्य निधि है।

ज्ञानदेव अग्निहोत्री जी के साहित्य से मेरा प्रथम परिचय १९८४ में हुआ, जब मैंने एस.वाय., बी.ए. में ` शुतुरमुर्ग ` नाटक का अध्ययन किया था। इस नाटक से प्रभावित होकर मैंने अग्निहोत्री जी के अन्य नाटक प्राप्त करने का प्रयास किया, परंतु उन दिनों सिर्फ ` नेफ्ता की एक शाम ` ही हाथ लगा। इस नाटक को पढने के बाद तो अग्निहोत्री जी मेरे प्रिय नाटककार बन गए। उनके नायकों ने मुझे प्रभावित कर दिया।

अब एम. फिल्. में लघु-शोध प्रबन्ध के लिए विषाय चुनना पडा, तो एक ही नाम मेरे सामने आ गया - ज्ञानदेव अग्निहोत्री।

` शुतुरमुर्ग ` और ` नेफ्ता की एक शाम ` के नायकों ने तो मुझे पहले ही प्रभावित किया था। अब उनके अन्य नाटकों में नायकों का चित्रण किस प्रकार किया गया है तथा उनके सभी नाटकों का अध्ययन करने के हेतु मैंने ` ज्ञानदेव अग्निहोत्री के नाटकों में नायक ` विषाय लघु-शोध प्रबन्ध के लिए

चुन लिया । जब मैंने इस विषय का प्रस्ताव अपने निर्देशक आदरणीय गुरुवर्य डा.व्ही.व्ही. द्रविड जी के सम्मुख रखा, तो आपने हामी भर दी ।

साथ ही मेरे मन में एक और जिज्ञासा भी थी, कि संस्कृत तथा पाश्चात्य साहित्य में नायक के बारे में क्या विचार हैं और हिंदी नाट्य साहित्य में भारतेंदु काल, प्रसाद काल, प्रसादोत्तर काल तथा स्वाधीनतोत्तर काल में नायक का चित्रण किस प्रकार किया गया हैं । मैंने इन सब बातों का भी अध्ययन करने का प्रयास किया हैं ।

ज्ञानदेव अग्निहोत्री जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व से मैं अनभिज्ञ था । इसलिए उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व की जानकारी पाने का प्रयास मैंने किया हैं ।

हिंदी नाट्य साहित्य के विकास की रूपरेखा तथा नाटक के तत्वों का विवेचन अनिवार्य हैं । मैंने इसका भी अध्ययन किया हैं ।

मेरे मन की जिज्ञासाओं का शमन करने के हेतु मैंने जो शोधकार्य किया हैं वह केवल एक प्रयास मात्र हैं ।

मैंने अपना लघु-शोध प्रबन्ध निम्न पाँच अध्यायों में प्रस्तुत किया हैं ।

अध्याय पहला --

इस अध्याय में मैंने हिंदी नाट्य साहित्य की विकास की रूपरेखा प्रस्तुत की हैं । वह इस प्रकार हैं - भारतेंदु युग - प्रसाद युग : नवीन दिशा (१९१० - १९३३ ई.) - हिंदी नाटकों का नव्युग (१९३३-१९४७) ; प्रसादोत्तर कालीन नाटक - हिंदी नाटक - १९४७ ई. के बाद.

अध्याय दूसरा --

इस अध्याय में हिंदी नाटक का तात्त्विक विवेचन इस प्रकार किया है --
भारतीय नाट्य तत्त्व - वस्तु - पात्र - रस,
पाश्चात्य नाट्य तत्त्व - कथानक - चरित्र - चित्रण - संवाद -
वातावरण - भाषाशैली - उद्देश्य - रंगमंचीयता,

अध्याय तीसरा --

इस अध्याय में ज्ञानदेव अग्निहोत्री जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व की जानकारी दी है, ताकि पाठक अग्निहोत्री जी के साहित्य का सामान्य ज्ञान प्राप्त कर सकें ।

अध्याय चौथा --

इस अध्याय में ` नाटकों में नायक ` का विश्लेषण इस प्रकार किया है -- नायक - भारतीय सिध्दांत नायक - शास्त्रीय परिभाषा - नायक - वर्गीकरण -- नायक - पाश्चात्य सिध्दांत -- भारतेंदु कालीन हिंदी नाटकों में नायक - प्रसाद युगीन हिंदी नाटकों में नायक - प्रसादोत्तर हिंदी नाटकों में नायक - स्वाधीनतोत्तर हिंदी नाटकों में नायक --

अध्याय पाँचवा --

इस अध्याय में मैं ने ` ज्ञानदेव अग्निहोत्री के नाटकों में नायक ` का विश्लेषण प्रस्तुत किया है । वह इस प्रकार है ---

` नेफा की एक शाम ` - नायक - गोंगो।
माटी जागी रे -- नायक - प्रकाश ।
वतन की आबरू - नायक - इलाही बख्श।
चिराग जल उठा - नायक - टीपू सुलतान।
शुतुरमुर्ग - नायक - राजा।
अनुष्ठान - पुरुष।
दंगा - नायक - पंडितजी और बड़े मियाँ।

इस प्रकार विषय का अध्ययन करने के पश्चात् जो निष्कर्ष हाथ लगे, वे मैंने उपसंहार में रखे हैं ।

मेरे इस प्रयास में जिन लोगों की सहायता मिली हैं उनका आभार प्रदर्शन करना मेरा आद्य कर्तव्य हैं --

जिनकी विद्वता के सामने मेरा शीश नम्रतासे झुक जाता हैं, वे मेरे निर्देशक आदरणीय गुरुवर्य डा.व्ही.व्ही.द्रविडजी का निर्देशन अनमोल हैं । उनका निष्पक्ष व्यवहार और कार्य की गति अनुकरणीय हैं । उनकी ओजस्वी वाणी और निर्मल मन प्रभावित करनेवाला हैं । मैं उनका हमेशा ऋणी रहूँगा ।

श्रध्देय गुरुवर्य डा.व्ही.के. मोरे जी की प्रेरणा एवं आशीर्वाद हमेशा मेरे साथ रहा हैं । उनका सहकार्य अनमोल हैं । उनका आभार प्रदर्शन करना मेरा आद्य कर्तव्य हैं ।

प्रा.डा.के.पी.शाहा, प्रा.कणबरकर, प्रा.वेदपाठक, प्रा.तिवले, प्रा.श्रीमती रजनी भागवत, प्रा.हिरेमठ, प्रा.मुजावर आदि गुरुजनों से जो सहायता मिली उसके लिए मैं उनका आभारी हूँ ।

प्रा.ए.ए.पोतदार जी की काफी सहायता मिली हैं । उसके लिए मैं उनका आभारी हूँ ।

प्रा.नंदकुमार रानभरे, प्रा.बाबासाहेब पोवार, तथा मेरे मित्र सुहास अंगापूरकर का सहयोग महत्वपूर्ण हैं । मैं उनका आभारी हूँ । रणजीत राजकर और अशोक शिंगे का जो सहकार्य मिला, उसके लिए मैं उनका आभारी हूँ । इस शोध प्रबन्ध के टंकलेखन में श्री बालकृष्ण रा.सावन्त जी ने जो सहकार्य दिया हैं उसके लिए मैं उनका आभारी हूँ ।

भविष्य में भी इन सब लोगों से सहयोग की कामना करते हुए सुधी समीक्षकों के सामने प्रस्तुत लघु-शोध प्रबन्ध प्रस्तुत करता हूँ ।

सधन्यवाद

भिमराव कुंभार
शोध - छात्र

कोल्हापुर ।
दिनांक :१७: ९ :१९९० ।

••

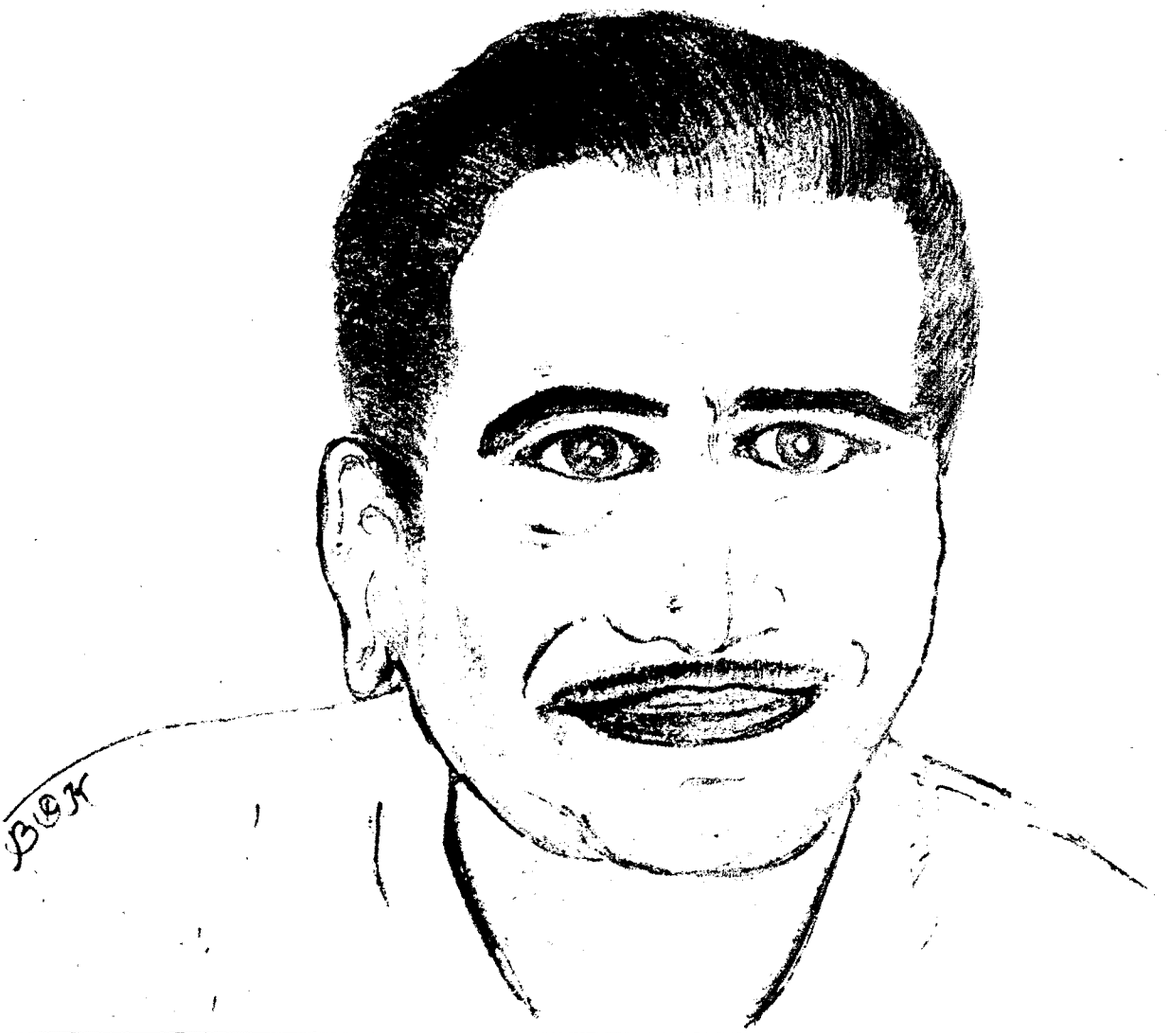

नाटककार ज्ञानदेव अग्निहोत्री